## घोषणा

मैं प्रियंका दास एतद् द्वारा यह घोषणा करती हूँ कि प्रस्तुत शोध-प्रबंध **"चाय जनगोष्ठी के लोक साहित्य का समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन (असम के विशेष संदर्भ में)"**, हिंदी विभाग, मानविकी एवं सामाजविज्ञान विद्यापीठ, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम के पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत है। जहाँ तक मुझे ज्ञात है इस शोध-सामग्री का उपयोग कहीं भी शोधोपाधि के लिए नहीं किया गया है और न ही यह शोध-शीर्षक अन्यत्र शोधोपाधि का आधार बना है।

## Declaration

I do hereby declare that the thesis titled **"Chaay Janagoshthi Ke Lok Sahitya Ka Samajbhashawaigyanik Adhyayan (Assam Ke Wishesh Sandarbh Mein)"** submitted by me to Tezpur University, Tezpur, Assam in partial fulfillment of the requirements for the Degree of Doctor of Philosophy in the Department of Hindi under the school of Humanities and Social Sciences, is my own and that it has not been submitted to any other institution, including the University in any other form or published at any time before.

Priyanka Das

(प्रियंका दास)

हिंदी विभाग

तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर

असम-784028

## प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि प्रियंका दास, शोधार्थी, हिंदी विभाग, मानविकी एवं समाज विज्ञान विद्यापीठ, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम ने अपना शोध-प्रबंध **"चाय जनगोष्ठी के लोक साहित्य का समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन (असम के विशेष संदर्भ में)"** मेरे पर्यवेक्षण एवं निर्देशन में इस विश्वविद्यालय की पीएच. डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत किया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध शोधार्थी के मौलिक एवं स्वतंत्र कार्य का परिणाम है। उद्धरणों एवं संदर्भों का यथास्थान उल्लेख कर दिया गया है। मेरे संज्ञान में इस अनुसंधान-सामग्री का उपयोग आंशिक या पूर्ण रूप से अन्यत्र शोध की उपाधि हेतु नहीं किया गया है।

## Certificate

This is to certify that the thesis entitled **"Chaay Janagoshthi Ke Lok Sahitya Ka Samajbhashawaigyanik Adhyayan (Assam Ke Wishesh Sandarbh Mein)"** submitted to the School of Humanities and Social Sciences, Tezpur University, Tezpur in partial fulfillment for the award of the degree of Doctor of Philosophy in Hindi is a record of research work carried out by Ms. Priyanka Das under my supervision and guidance.

All help received by her from various sources have been duly acknowledged. No part of the thesis has been submitted elsewhere for the award of any other degree.

शोध-निर्देशक

अनुशब्द

(डॉ. अनुशब्द)
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
मानविकी एवं समाज विज्ञान विद्यापीठ
तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम

डॉ. अनुशब्द
सहायक आचार्य
हिन्दी विभाग
तेजपुर विश्वविद्यालय
तेजपुर, असम-784028

# आभार

इस शोध-कार्य का संपन्न होना मेरे जीवन की बड़ी उपलब्धि है। जिन रचनात्मक व्यग्रताओं से मैं इन पाँच सालों में गुज़री हूँ यह शोध-प्रबंध उसकी सकारात्मक परिणति है। सर्वप्रथम मैं उस परब्रह्म की आभारी हूँ जिन्होंने मुझे इस श्रमसाध्य कार्य को करने की ऊर्जा तथा सामर्थ्य प्रदान की। इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह सिर्फ मेरी मेहनत का परिणाम नहीं है। इसमें उन आत्मीयजनों की भूमिका है जिन्होंने शोध-कार्य के दौरान कदम-कदम पर मेरा साथ दिया। मैं अपने शोध-निर्देशक डॉ० अनुशब्द की आभारी हूँ जिनके अमूल्य मार्गदर्शन ने पूर्वाग्रह रहित होकर सोचने-समझने के लिए निरंतर प्रोत्साहित किया है। आज जब भौतिक विकास की आँधी ने लोक की महत्ता को संदेह में डाल दिया है, भाषाई अस्मिताओं के लिए मुश्किलें खड़ी कर दी हैं, ऐसे कठिन समय में उन्होंने लोक के आत्मीय पक्षों के प्रति उदार और संवेदनशील बने रहना तथा भाषा के वृहत्तर सामर्थ्य को ध्यान में रखना सिखाया। हिंदी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय के अध्यक्ष प्रो० प्रमोद मीणा सहित अन्य सभी आचार्यों ने शोध-कार्य के दौरान समय-समय पर उचित परामर्श दिये। सभी के प्रति कृतज्ञ हूँ। विद्यालय के शिक्षक श्री पद्मधर गोहाईं सर, श्रीमती ननी दत्त मैडम तथा श्रीमती गीतांजलि हजारिका मैडम ने भाषाई ज्ञान के नींव को सुदृढ़ करने के साथ ही हमेशा मेरे मनोबल को बढ़ाया है। उनकी ताउम्र शुक्रगुज़ार रहूँगी।

क्षेत्र-सर्वेक्षण के दौरान शोध-सामग्री मुहैया कराने में श्री मकर सिंह भूमिज (तिनसुकिया), श्री प्रकाश कुर्मी (तिनसुकिया), पद्मश्री दुलाल मानकी (तिनसुकिया), श्रीमती मूलेश्वरी कुर्मी (तिनसुकिया), श्री हरि चंद्र कुर्मी (तिनसुकिया), श्री लिलेश्वर कुर्मी (डिब्रूगढ़), श्रीमती रीता गोवाला (डिब्रूगढ़), श्री भद्र राजोवार (शिवसागर), श्रीमती सबीता राजोवार (शिवसागर), श्रीमती अनीता एल.पी. (चराईदेव), श्री प्रबीन ताँती (जोरहाट), श्री सुशील कुर्मी (तेजपुर), श्रीमती कुसुम कुर्मी (तेजपुर) ने पूरी आत्मीयता से सहायता की। निःस्वार्थ भाव से किये गये इनके मदद के लिए आभारी हूँ।

मैं अपने पिता डॉ० रामनरेश दास एवं माता श्रीमती प्रभा दास की आजीवन ऋणी हूँ जिन्होंने मनुष्य की अस्मिता और मर्यादा की रक्षा, सामाजिक न्याय तथा सदाचरण का पाठ पढ़ाया। छोटी बहन दीपिका तथा छोटे भाई दीपेश के स्नेह ने कई मौकों पर टूटने से बचाया है। ज़िन्दगी को सुचारू रूप से चलाने के लिए ऐसे आत्मीय रिश्तों का होना बेहद ज़रूरी है। इस सहज स्नेह के लिए उन्हें अशेष शुभाशीष।

मेरे अग्रज सौरभ भईया और नवरूपा दीदी ने जीवन के साथ खुला, उदार और दोस्ताना संबंध बनाना सिखाया। शोध-कार्य के दौरान इनके साथ अनायास ही एक पारिवारिक और बेहद अनौपचारिक रिश्ता-सा बन गया। इनके साथ के लिए मैं हृदय के अंतरतम से कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। इसी क्रम में मित्र फोज़िला, अनुज मनोज तथा स्मृति का नाम भी उल्लेखनीय है। शोध-कार्य के दौरान इनकी आत्मीयता और उत्साहवर्द्धन ने मेरे मनोबल को कमज़ोर पड़ने से बचाया। इनको धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ।

मैं 'केंद्रीय पुस्तकालय' तेजपुर विश्वविद्यालय, 'केंद्रीय पुस्तकालय' दिल्ली विश्वविद्यालय, 'केंद्रीय पुस्तकालय' जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, 'केंद्रीय पुस्तकालय' डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय, 'ग्रंथागार' तिनसुकिया महाविद्यालय तथा असम चाह जनगोष्ठी साहित्य सभा, तिनसुकिया शाखा के अध्यक्षों प्रति आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने शोध से संबंधित पुस्तकों तथा पत्रिकाओं को उपलब्ध कराने में विशेष सहयोग किया।

अंत में, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा प्रदान किये गये शोध छात्रवृत्ति (JRF-SRF) के लिए मैं आयोग के प्रति आभार प्रकट करती हूँ।

# भूमिका

*“मैं मज़दूर, मुझे देवों की बस्ती से क्या...?*

*अनगिनत बार पृथ्वी पर मैंने स्वर्ग बनाए...”*

प्रसिद्ध आलोचक मैनेजर पाण्डेय की पुस्तक ‘साहित्य और इतिहास दृष्टि’ में इस बात का ज़िक्र मिलता है कि ‘साहित्य का इतिहास भाषा के इतिहास से जुड़ा होता है और भाषा का इतिहास समाज के इतिहास से’। कहने की आवश्यता नहीं है कि भाषा किसी भी देशकाल के विभिन्न समुदायों के अंतर्गत कुछ विशष्ट अर्थ का प्रतिपादन करती है। यह किसी व्यक्ति की आनुवांशिकी पर निर्भर नहीं करती अपितु सामाजिक परिवेश में विकसित होती है और ग्रहण योग्य बनती है। इसीलिए भाषा को एक सामाजिक उत्पत्ति के रूप में माना गया है जिसका परिस्थिति के अनुसार क्रमिक विकास होता रहता है। हमने देखा है कि सभ्यतागत परिवर्तन एक दिन में नहीं होते। सामाजिक विकास की यह प्रक्रिया बहुत धीमी और लंबी होती है। कालांतर में इस परिवर्तन का प्रभाव हम भाषा में भी देखते हैं। इसमें कोई दो राय नहीं है कि लोक ही भाषा को गढ़ता है जिसमें समय के साथ भाषा में कुछ तत्व जुड़ते जाते हैं तो कुछ छूटते चले जाते हैं। इस प्रकार सामान्य जनता जिस भाषा का प्रयोग करती है उसमें एक तरफ तो समाज के विकास की सतत प्रक्रिया को देखा जा सकता है तो दूसरी ओर सामाजिक यथार्थ के प्रकटीकरण से साहित्य भी समृद्ध होता है।

भारतीय संस्कृति को जीवंत बने रहने के लिए लोक संस्कृति रूपी ऑक्सीजन की आवश्यकता है कारण कि भारतीय संस्कृति की जड़ें उसकी सामान्य जनता अर्थात् ‘लोक’ तथा लोक की संस्कृति में संरक्षित हैं। लोक जीवन के आचार-व्यवहार, रीति-नीति, परंपराओं आदि से संबंधित तमाम अनुभवों को लोक अपनी देशज भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। अतः लोक साहित्य जीवन की आशा-निराशा, उत्साह और उमंग का साहित्य है जो किसी देश के सभ्यतागत विकास के साथ ही सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों का प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए लोक साहित्य में अपनत्व तथा सौहार्दपूर्ण भावों का सहज उच्छलन होता है। हम बराबर इन लोक रचनाओं में गाँव की ताज़गी, खेत-खलिहानों में लहलहाते फसलों की हरियाली, फलों के बागीचे में बचपन की अठखेलियों को ढूढ़ते हैं लेकिन आज के समय की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि भारत में लोक संस्कृति और साहित्य की इतनी समृद्ध और प्राचीन परंपरा होने के बावजूद आज पश्चिमी सभ्यता का अंधानुकरण हो रहा है। पश्चिम के विचारों पर चलते हुए हमारे अंदर लोक को लेकर हेय दृष्टि विकसित होने

लगी है। हमारी लोकभाषाएँ अधोगति की ओर अग्रसर होने लगी हैं जिससे इन भाषाओं में संचित लोक संस्कृति तथा अनुभवजन्य ज्ञान का भी लोप हो रहा है। विकास के नाम पर बाजारवाद को जिस तरह से तवज्जो दिया जा रहा है क्या वह सच्चे अर्थों में प्रगति है, इस बात पर ग़ौर किया जाना चाहिए। हालिया परिस्थिति यह है कि एक तरफ आयातित संस्कृति को ही आधुनिक और विकसित माना जाने लगा है तथा दूसरी तरफ 'ग्लोबल गाँव' की परिकल्पना के जरिये वैश्विक बाज़ार में लोक कला, संस्कृति और साहित्य का एक 'कल्चरल प्रोडक्ट' के रूप में प्रक्षेपण हो रहा है। मुनाफे के उद्देश्य से लोक कलात्मक सृजन में मनमाने ढंग से परिवर्तन को अंजाम दिया जा रहा है जिसके केंद्र में केवल उपभोक्ता का आकर्षण और मनोरंजन है। इस तरह की सांस्कृतिक क्षति से हमें ऐतराज़ होना चाहिए। कुलमिलाकर सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के इस उधेड़बुन में हम भारतीय लोक संस्कृति और साहित्य को 'महाविमर्श' के दायरे में खड़ा पाते हैं।

बहरहाल, विकास और आधुनिकता की आँधी ने लोक साहित्य और संस्कृति की महत्ता व प्रासंगिकता को संकट की ओर धकेल दिया है तथा लोक की भाषाई अस्मिता को प्रश्नांकित किया है। इसमें जातीय और जनजातीय दोनों ही संस्कृतियाँ प्रभावित हुई हैं। ऐसी स्थिति में इनका अन्वेषण और संरक्षण आज के समय की सबसे बड़ी माँग है। लोक जीवन के आचार-अनुष्ठान, लोकविश्वास तथा लोकाभिव्यक्ति के माध्यम से पुरातन संस्कृति में सन्निविष्ट ज्ञान की नवीन उद्भावनाओं को वैज्ञानिक दृष्टि से जाना-समझा जा सकता है। सर्वविदित है कि पूर्वोत्तर के राज्य विभिन्न जातीय और जनजातीय समुदायों का समागम स्थल हैं। इनमें भी विशेषकर असम की बात की जाए तो इसे 'मिनी इंडिया' कहा जा सकता है। इस राज्य में प्राचीन काल से ही पूर्वोत्तर सहित समस्त भारत के विभिन्न जातिगत लोगों का वास है जो असम की संस्कृति के साथ ही अपनी परंपरागत संस्कृति का संवहन करते हैं। मसलन- नागा, कुकी, बोड़ो, कार्बी, चुतिया, आहोम, मटक, मराण, राभा, सोनोवाल कछारी, चाय जनगोष्ठी इत्यादि। ग़ौरतलब है कि असम की चाय जनगोष्ठी में ही लगभग सौ से अधिक जातियाँ तथा आदिवासी समुदाय के लोग समाहित हैं जो मूलतः भारत के विभिन्न प्रांतों से ताल्लुक रखते हैं। इन नाना प्रांतीय समुदायों को ब्रिटिश शासन काल में ही चाय की खेती के लिए असम लाया गया था। इस समाज की इंद्रधनुषी संस्कृति तथा संप्रेषण हेतु प्रयुक्त मिश्रित भाषा में रचित साहित्य अपने आप में अद्वितीय है। चूंकि मेरा जन्म चाय बागान के इलाके में ही हुआ है, अतः बचपन से ही चाय श्रमिकों के जीवन की आपाधापी को, उतार-चढ़ाव को मैंने बहुत करीब से देखा है। इस संदर्भ में उदय प्रकाश जी की यह उक्ति मेरे लिए प्रेरणादायी रही कि 'जीवन की वास्तविकता किसी भी काल्पनिक साहित्यिक कहानी से ज्यादा हैरतअंगेज

होती है। और फिर ऐसी वास्तविकता जो किसी मज़दूर के जीवन से जुड़ी हुई हो।' नित प्रति चाय श्रमिकों की जीवन-शैली, सामाजिक स्थिति, भाषा, सांस्कृतिक अनुष्ठानों आदि से संबंधित अनेक जिज्ञासाओं के कारण इस क्षेत्र में शोध करने हेतु मेरा रुझान हुआ और मैंने शोध-कार्य हेतु *"चाय जनगोष्ठी के लोक साहित्य का समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन (असम के विशेष संदर्भ में)"* विषय का चयन किया।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध चाय जनगोष्ठी की सामाजिक-सांस्कृतिक और भाषाई सरोकारों को उद्घाटित करता है। शोध के लिए अध्ययन-क्षेत्र के तौर पर विशेष रूप से ऊपरी असम के तिनसुकिया, डिब्रूगढ़, चराईदेव, शिवसागर, जोरहाट तथा शोणितपुर (मध्य असम) जिलों का सर्वेक्षण किया गया है। इसके पश्चात् चाय जनगोष्ठी में लिखित तथा वाचिक रूप में प्रचलित लोक साहित्य का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से यह शोध-प्रबंध कुल छह अध्यायों में विभक्त है। प्रथम अध्याय *'समाजभाषाविज्ञान: अवधारणा एवं संकल्पनाएँ'* पर केंद्रित है। इसमें भाषा और समाज के परस्पर सह-संबंध को दर्शाते हुए समाजभाषाविज्ञान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का उल्लेख किया गया है। समाजभाषाविज्ञान, परिस्थिति और संदर्भ के अनुकूल भाषा में प्रयुक्त होने वाले वैकल्पिक वाक्-चयनों का समाज-सापेक्ष अध्ययन करता है। इसके लिए समाजभाषाविज्ञान में कुछ संकल्पनाएँ मौजूद हैं। इस अध्याय के अंतर्गत समाजभाषाविज्ञान के स्वरूप तथा विभिन्न संकल्पनाओं को सोदाहरण स्पष्ट किया गया है तथा भाषाविज्ञान से समाजभाषाविज्ञान के अलगाव के बिन्दुओं पर भी बात की गयी है।

दूसरे अध्याय का शीर्षक है *'लोक साहित्य: स्वरूप, क्षेत्र एवं विविध विधाएँ'*। इस अध्याय के अंतर्गत लोक की अवधारणा पर विचार करते हुए लोक और शास्त्र के पार्थक्य पर प्रकाश डाला गया है। इसके अलावा लोक साहित्य के विस्तृत स्वरूप को उद्घाटित करते हुए इसकी प्रमुख विधाओं यथा- लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोक नाट्य तथा लोक सुभाषित पर सोदाहरण चर्चा की गयी है।

तीसरा अध्याय *'चाय जनगोष्ठी: परिचय एवं इतिहास'* पर एकाग्र है। इस अध्याय में असम में चाय उद्योग की स्थापना तथा चाय श्रमिकों को असम लाये जाने से पूर्व की स्थिति का उल्लेख किया गया है। इसके साथ ही चाय जनगोष्ठी का परिचय देते हुए उनके सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा शैक्षिक स्थिति पर विस्तारपूर्वक विचार किया गया है। चाय जनगोष्ठी की संपर्क भाषा 'असमिया सादरी' को ध्वनि प्रकृति, भाव

प्रकृति तथा मूल शब्दभंडार के स्तर पर विस्तृत विश्लेषण किया गया है। तथा, अंत में चाय जनगोष्ठी के प्रमुख जातिगत समुदायों का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है।

चौथे अध्याय का संबंध *'चाय जनगोष्ठी की संस्कृति और संस्कार'* से है। इसके अंतर्गत चाय श्रमिकों की भागदौड़ भरी ज़िन्दगी, तमाम हताशा, कुंठा आदि के बावजूद उनकी जिजीविषा, ईश्वर तथा प्रकृति के प्रति उनकी आस्था को रेखांकित किया गया है। इसके अलावा चाय जनगोष्ठी के प्रमुख पर्व-त्योहारों तथा संस्कारगत अनुष्ठानों का उल्लेख करते हुए इस समाज में प्रचलित रीति-रिवाज, आचार-विचार, लोक मान्यताओं तथा लोक विश्वासों के संदर्भ में विस्तार से चर्चा की गयी है। इसी क्रम में असमिया परिवेश और संस्कृति के संस्पर्श की वजह से चाय जनगोष्ठी की मिश्रित संस्कृति में कालांतर से हुए परिवर्तनों को भी रेखांकित किया गया है। चाय जनगोष्ठी में प्रचलित लोक कलात्मक सृजन के उत्कृष्ट नमूनों में खासकर- वास्तुकला, शिल्पकला, मृत्तिकाकला, बाँस-बेंत तथा काष्ठ कला, नृत्य और चित्र कला आदि का उल्लेख करते हुए इनके सामाजिक सरोकार तथा प्रासंगिकता पर विचार किया गया है।

पाँचवा अध्याय *'चाय जनगोष्ठी के गेय लोक साहित्य का समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन'* को समर्पित है। इस अध्याय में चाय जनगोष्ठी में गीतात्मक शैली में प्रचलित लोक साहित्य की विधाओं जैसे- लोकगीत, लोक सुभाषित तथा मंत्र साहित्य को शामिल किया गया है। समाजभाषाविज्ञान के विभिन्न उपकरणों के आधार पर इन तीनों विधाओं के अंतर्गत वाचिक तथा लिखित रूप में मौजूद तथ्यों का समाजभाषिक दृष्टि से अध्ययन-विश्लेषण किया गया है तथा उनमें अंतर्निहित विभिन्न सामाजिक अर्थ छायाओं को उद्घाटित किया गया है। ग़ौरतलब है कि लोकगाथा, लोक साहित्य की एक प्रमुख गीतात्मक विधा है किन्तु क्षेत्र-सर्वेक्षण के दौरान इससे संबंधित कोई सामग्री उपलब्ध न हो पाने के कारण उक्त अध्याय में इसे शामिल नहीं किया जा सका है।

छठे और अंतिम अध्याय का विवेच्य है *'चाय जनगोष्ठी के कथात्मक लोक साहित्य का समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन'*। इस अध्याय के अंतर्गत चाय श्रमिक समाज में प्रचलित लोककथाओं तथा लोकनाट्यों को विवेचित किया गया है। इसमें चाय जनगोष्ठी की मिथकीय कथा, व्रतकथा, उपदेशात्मक तथा सामाजिक कथा और 'ललिता-सबर पाला' लोक नाट्य के चयनित अंशों का समाजभाषावैज्ञानिक दृष्टि से सविस्तार चर्चा की गयी है।

शोध-प्रबंध के विभिन्न अध्यायों में विषय के अनुरूप यथास्थान छायाचित्र भी प्रस्तुत किये गये हैं। इस शोध-प्रबंध के अंत में सभी उपलब्धियों एवं निष्पत्तियों को *'समाहार'* के रूप में प्रस्तुत किया गया है तथा परिशिष्ट में शोध-सर्वेक्षण हेतु प्रयुक्त प्रश्नावली को संलग्न किया गया है।

अंत में चाय जनगोष्ठी जैसे विविधवर्णी और संलयित समाज की सांस्कृतिक और भाषाई विशिष्टता पर गहन विचार करने के उपरांत मंगलेश डबराल जी की इन पंक्तियों के उल्लेख का लोभ संवरण नहीं किया जा सकता –

'हम आ गये हैं

घर से बहुत दूर

अब यह परदेश की भूमि है

हमारे पास जो कुछ है

उसे बाँट लेना चाहिए...'

इस शोध-कार्य के दौरान किसी भी तरह के पूर्वाग्रह से बचने के साथ ही प्राप्त तथ्यों व सामग्रियों के साथ न्याय करने का यथासंभव प्रयत्न किया गया है। जहाँ कहीं भी स्थापनाएँ दी गयी हैं वे 'कागद की लेखी' के साथ-साथ 'आँखिन देखी' भी हैं। शोध के क्रम में शोध-निर्देशक आदरणीय डॉ० अनुशब्द सर से समय-समय पर चाय जनगोष्ठी के सामाजिक, सांस्कृतिक और भाषाई आयामों पर निरंतर चर्चा होती रही। इसके साथ ही क्षेत्र-सर्वेक्षण के दौरान आने वाली चुनौतियों का सामना करने हेतु उनसे सकारात्मक ऊर्जा और बहुमूल्य सुझाव प्राप्त हुए।

तमाम प्रयत्नों के बावजूद शोध-प्रबंध में जो उल्लेख्य बिंदु अनजाने ही छूट गये हैं या जिन पक्षों का उल्लेख नहीं हो पाया है अथवा जो भी कमियाँ रह गयी हैं, उनके लिए क्षमाप्रार्थी हूँ। मेरा यह अदना-सा प्रयास इस क्षेत्र में कार्य करने वालों का पथ किंचित भी आलोकित कर पाया तो इसे मैं अपने श्रम की सार्थकता समझूँगी।

*प्रियंका दास*

# तालिका-सूची


| *तालिका संख्या* | *शीर्षक* | *पृष्ठ संख्या* |
|---|---|---|
| 3.1 | सन् 1841-1938 ई० तक श्रमिकों का असम आव्रजन | 115 |
| 3.2 | असमिया सादरी के स्वर वर्णों की ध्वनि प्रकृति | 145 |
| 3.3 | असमिया सादरी में सर्वनामों का प्रयोग | 146 |
| 3.4 | चाय जनगोष्ठी में प्रचलित प्रकृति से संबंधित शब्दावली | 150 |
| 3.5 | चाय जनगोष्ठी में प्रचलित रिश्ते-नाते की शब्दावली | 151 |
| 3.6 | चाय जनगोष्ठी में प्रचलित खाद्यान्न की शब्दावली | 151 |
| 3.7 | चाय जनगोष्ठी में प्रचलित सांस्कृतिक शब्दावली | 152 |
| 3.8 | चाय जनगोष्ठी में प्रचलित रंगों और संख्याओं की शब्दावली | 153 |

# चित्र-सूची


| *चित्र संख्या* | *शीर्षक* | *पृष्ठ संख्या* |
|---|---|---|
| 1.1 | प्रोक्ति का वर्गीकरण | 54 |
| 3.1 | चाय जनगोष्ठी की प्रमुख भाषाओं का पारिवारिक वर्गीकरण | 142 |
| 4.1 | करम पूजा | 174 |
| 4.2 | कहबर प्रथा | 208 |
| 4.3 | ग्राम थान | 215 |
| 4.4 | मनसा थान | 215 |
| 4.5 | बाँस से निर्मित मछली पकड़ने का उपकरण | 219 |
| 4.6 | चाय श्रमिक की कच्ची झोपड़ी पर अंकित 'टिका-फँका' | 228 |
| 4.7 | गृह बाँधा पूजा के दौरान अंकित अल्पना | 229 |
| 4.8 | चाय जनगोष्ठी में प्रचलित कुछ आभूषण | 229 |
| 4.9 | धातु-निर्मित घड़े 'बटुवा' | 230 |
| 4.10 | घरेलू उपयोग के बर्तन 'बाटी' | 230 |
| 4.11 | 'ढांक' | 230 |
| 4.12 | 'मादल' | 230 |
| 4.13 | 'कोया' समुदाय की पारंपरिक वेश-भूषा | 231 |
| 4.14 | चाय जनगोष्ठी का जातीय नृत्य 'झुमुर' | 231 |
| 4.15 | विभिन्न औजार | 231 |

# संक्षेपाक्षर

| ***संक्षिप्त शब्द*** | ***पूर्ण शब्द*** |
|---|---|
| हि. | हिंदी |
| बा. भा. | बागानिया भाषा |
| SHG | Self Help Groups |
| OBC-TGL | Other Backward Caste- Tea Garden Labourers |
| ATLA | Assam Tea Labourers Association |
| AATGTSA | All Assam Tea Garden Tribes Students Association |
| ATTSA | Assam Tea Tribes Students Association |
| ACA | Adivasi Council of Assam |
| PLA | Plantation Labour Act |
| TBI | Tea Board of India |